विचार बिन्दु

दया और सत्यता परस्पर मिलते हैं, धर्म और शांति एक-दूसरे का साथ देतें हैं। –बाइबल

भारत के लिए ग्रैमी में बरसात हो रही है!

--ए.आर. रहमान

भारतीय संगीत के लिए यह बहुत बड़ी ख़बर है। न केवल भारतीय संगीत के लिए, हर भारतीय के लिए भी। हाल में अमरीका के शहर लॉस एंजिलस के क्रिप्टो डॉट कॉम एरिना में आयोजित हुए 64 वें ग्रैमी अवार्ड समारोह में जब हमारे देश के विख्यात तबला वादक उस्ताद ज़ाकिर हुसैन, प्रतिष्ठित बांसुरी वादक राकेश चौरसिया, जाने-माने गायक शंकर महादेवन, प्रसिद्ध तालवादक वी.सेल्वागणेश और सुपरिचित वायलिन वादक गणेश राजगोपालन को ग्रैमी पुरस्कार दिए जाने की घोषणा हुई तो स्वाभाविक ही था कि हर भारतीय का सर गर्व से ऊंचा हो गया। उस्ताद ज़ाकिर हुसैन को तीन, राकेश चौरसिया को दो और शेष तीनों कलाकारों को एक-एक ग्रैमी अवार्ड दिया जाने की घोषणा हुई। गायक शंकर महादेवन, वायलिन वादक गणेश राजगोपालन और तबलावादक वी.सेल्वागणेश के एक फ्यूज़न संगीत समूह शक्ति ने अपने एल्बम दिस मूमेण्ट के लिए सर्वश्रेष्ठ वैश्विक संगीत एल्बम की श्रेणी में यह पुरस्कार प्राप्त किया है। इस एल्बम में इन कलाकारों के साथ इस संगीत समूह के संस्थापक सदस्य ब्रिटिश गिटार वादक जॉन मैकलॉघलिन का कृतित्व भी शामिल है। यहीं यह जान लेना भी उपयुक्त होगा कि लगभग 45 से भी अधिक वर्षों में शक्ति ने यह अपना पहला स्टूडियो एल्बम जून 2023 में ज़ारी किया था। उस्ताद ज़ाकिर हुसैन को इस दिस मूमेण्ट एल्बम के अतिरिक्त एक अन्य एल्बम 'पश्तो' के लिए सर्वश्रेष्ठ वैश्विक संगीत प्रस्तुति और एज़ वी स्पीक के लिए सर्वश्रेष्ठ समसामयिक वाद्य एलबम का ग्रैमी पुरस्कार भी मिला है। इस तरह तीन ग्रैमी पुरस्कार उनके नाम से जुड़े हैं। यहीं यह भी जान लिया जाए कि सर्वश्रेष्ठ वैश्विक संगीत प्रस्तुतिकी श्रेणी में कुल आठ नामांकन थे जिनमें से एक फालू का अबण्ड्न्स इन मिलेट्स भी था। प्रसंगवश, इस गीत में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी दिखाई दिए थे। बांसुरी वादक राकेश चौरसिया ने अमरीकी बेंजो वादक फ्लेक और अमरीकी बास वादक एडगर मेयेर के साथ 'पश्तो और एज़ वी स्पीक के लिए दो ग्रैमी पुरस्कार जीते हैं। यह तो बताने की ज़रूरत ही नहीं होनी चाहिए कि उस्ताद ज़ाकिर हुसैन देश के महानतम तबला वादकों में से एक, उस्ताद अल्ला रक्खा खां साहब के और राकेश चौरसिया महान बांसुरी वादक पंडित हरि प्रसाद चौरसिया के सुपुत्र हैं। इन पुरस्कारों की घोषणा पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए जाने-माने संगीतकार एआर रहमान ने ठीक ही कहा कि 'भारत के लिए ग्रैमी में बरसात हो रही है'। यहीं यह भी बताता चलूं कि स्वयं एआर रहमान सन 2008 में स्लमडॉग मिलेनियर के लिए दो ग्रैमी पुरस्कार जीत चुके हैं।

ग्रैमी अवार्ड की गिनती संगीत उद्योग के सबसे अधिक प्रतिष्ठित पुरस्कारों में की जाती है। संगीत की दुनिया में इस अवार्ड को वैसा ही सम्मान प्राप्त है जैसा सम्मान पत्रकारिता की दुनिया में पुलित्ज़र को हासिल है। ग्रैमी अवार्ड विभिन्न श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं, जैसे पॉप, रॉक, कण्ट्री, जैज़, हिप-हॉप, रेगे, आरबी और शास्त्रीय संगीत आदि। इनके अलावा पैकेजिंग और एल्बम नोट्स सहित प्रोडक्शन और पोस्ट प्रोडक्शन कामों के लिए भी ये पुरस्कार दिए जाते हैं। इनके अतिरिक्त रिकॉर्ड, एल्बम, वर्ष का गीत और सर्वश्रेष्ठ नए कलाकार के लिए चार सामान्य पुरस्कार भी दिए जाते हैं। इन श्रेणियों में लगातार इज़ाफ़ा होता रहा है। मसलन इस वर्ष अर्थात 2024 में तीन नई श्रेणियां जोड़ी गई हैं– सर्वश्रेष्ठ अफ्रीकी संगीत प्रदर्शन, सर्वश्रेष्ठ वैकल्पिक जैज़ एल्बम और सर्वश्रेष्ठ पॉप डांस रिकॉर्डिंग। ग्रैमी पुरस्कार अमरीका की नेशनल एकेडेमी ऑफ रिकॉर्डिंग आर्ट्स एण्ड साइंसेज़ जिसे आम बोलचाल में रिकॉर्डिंग अकादमी या अकादमी कहा जाता है, के द्वारा दिए जाते हैं। पुरस्कारों के लिए नामांकन और चयन की एक लम्बी प्रक्रिया होती है और हर बरस उसे अद्यतन कर अधिकाधिक निष्पक्ष और पारदर्शी बनाया जाता है। ग्रैमी का पात्र होने के लिए रिकॉर्डिंग या संगीत वीडियो संयुक्त राज्य अमरीका में एक निश्चित अवधि में ज़ारी होना चाहिए। प्रविष्टियां रिकॉर्ड कंपनियों के अतिरिक्त अकादमी के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत की जा सकती हैं और पात्रता एवं श्रेणी प्लेसमेण्ट तय करने के लिए उनकी समीक्षा की जाती है। ग्रैमी पुरस्कार पहली बार 1959 में लॉस एंजिलस में दिए गए थे। तब केवल 28 पुरस्कार दिए गए थे, जिनकी संख्या बढ़ते-बढ़ते अब 84 को पार कर चुकी है। प्रथम पुरस्कार समारोह में एला फिट्ज़गेराल्ड, फ्रैंक सिनात्रा और किंग्स्टन ट्रायो शामिल थे। ग्रैमी पुरस्कार के रूप में कोई नकद धन राशि नहीं दी जाती है। विजेता को केवल एक ग्रैमी प्रतिमा प्रदान की जाती है। यह प्रतिमा एक सोना चढ़ाया हुआ ग्रामोफ़ोन है जिसे आजकल हम रिकॉर्ड प्लेयर भी कहते हैं। ग्रैमी शब्द ग्रामोफ़ोन का ही संक्षिप्त रूप है और इस तरह यह पुरस्कार ग्रामोफ़ोन और संगीत उद्योग पर इसके क्रांतिकारी प्रभाव को सम्मानित करता है। भले ही ग्रैमी पुरस्कार विजेता को कोई नकद धनराशि प्राप्त नहीं होती है, इस पुरस्कार की प्रतिष्ठा इतनी अधिक है कि इसकी वजह से पुरस्कृत कलाकार की प्रतिष्ठा में अकल्पनीय वृद्धि होती है और उसके संगीत की बिक्री में उछाल आ जाता है तथा कलाकार के रूप में उसकी फ़ीस कई गुना बढ़ जाती है। यही वजह है कि हर कलाकार इस पुरस्कार को पाने का ख़्वाब देखता है।

> **भले ही ग्रैमी पुरस्कार विजेता को कोई नकद धनराशि प्राप्त नहीं होती है, इस पुरस्कार की प्रतिष्ठा इतनी अधिक है कि इसकी वजह से पुरस्कृत कलाकार की प्रतिष्ठा में अकल्पनीय वृद्धि होती है और उसके संगीत की बिक्री में उछाल आ जाता है तथा कलाकार के रूप में उसकी फ़ीस कई गुना बढ़ जाती है। यही वजह है कि हर कलाकार इस पुरस्कार को पाने का ख़्वाब देखता है।**

भारत के हिस्से में पहला ग्रैमी पुरस्कार सन् 1968 में आया था। उस साल पंडित रवि शंकर को उनके एल्बम ईस्ट मीट्स वेस्ट के लिए बेस्ट चेम्बर म्यूज़िक परफॉर्मेंस की श्रेणी में यह पुरस्कार दिया गया था। इसके बाद 1969, 1970 और 1971 में कुल चार बार भारतीय संगीतकार ज़ुबिन मेहता अलग-अलग श्रेणियों में नामांकित हुए, लेकिन भारत को अगला पुरस्कार फिर से पंडित रवि शंकर ही दिलवा सके। सन् 1973 में उनके द कंसर्ट फॉर बांग्लादेश को एल्बम ऑफ द ईयर का पुरस्कार मिला। इसके बाद छह बार नामांकित हो चुकने के बाद सन 1981 में ज़ुबिन मेहता ने दो ग्रैमी जीते। और इसके बाद 1982 में उन्होंने एक और 1990 में दो ग्रैमी जीते। नामांकित तो वे अनगिनत बार हुए। 1991 में टीएच विनायकराम और ज़ाकिर हुसैन ने अपने एल्बम प्लेनेट ड्रम के लिएबेस्ट वर्ल्ड म्यूज़िक एल्बम का ग्रैमी जीता, तो इससे अगले बरस अर्थात 1993 में पण्डित विश्वमोहन भट्ट की इसी श्रेणी में यह पुरस्कार मिला। इनके अतिरिक्त एआर रहमान को 'स्लमडॉग मिलिनेयर' के लिए दो ग्रैमी मिल चुके हैं। उस्ताद ज़ाकिर हुसैन, टीएच विनायकराम, एच श्रीधर वे अन्य भारतीय हैं जिन्हें यह पुरस्कार मिला है। जहां तक महिलाओं की बात है, फाल्गुनी शाह, तन्वी शाह और नीला वासवानी ये पुरस्कार हासिल कर चुकी हैं। बेंगलुरु के संगीतकार रिकी केज 2015 और 2022 में दो बार यह पुरस्कार जीत चुके हैं।

विगत वर्षों में भारतीय संगीत ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। एक समय वह था जब हमारे पंडित और उस्ताद अपने संगीत को सीने से चिपकाए रहते थे और वह समय भी अभी बहुत पुराना नहीं हुआ है जब हमारे गायक अपनी आवाज़ को रिकॉर्ड करवाने से बचते थे। उसके बाद समय ने करवट ली और पंडित रवि शंकर और उस्ताद अली अकबर खां ने पश्चिम को हमारे संगीत के सौंदर्य से चमत्कृत करके इसे बाहर की दुनिया तक पहुंचाने की शुरुआत की। बीट्ल्स का भारतीय संगीत से लगाव इसके प्रसार की बड़ी वजह बना। आहिस्ता-आहिस्ता हमारा संगीत भी वैश्विक होता गया है और ग्रैमी जैसे मंच पर इसकी धमाकेदार उपस्थिति इसकी ताकत और क्षमता की परिचायक है। आज जब सारी दुनिया का संगीत तकनीक में आए बदलावों की वजह से बड़ी चुनौतियों का सामना कर रहा है, ग्रैमी जैसे पुरस्कार उसमें नई ऊर्जा का संचार करने के कारण अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। नई तकनीक ने संगीत को सर्व सुलभ बना दिया है लेकिन इसी के साथ कलाकार के आर्थिक स्त्रोतों को भी सुखा दिया है। पहले हम रिकॉर्ड खरीदते थे तो रॉयल्टी का कुछ हिस्सा कलाकार तक भी पहुंचता था। अब वह संभावना लगभग समाप्त हो गई है। अब काफी कुछ बदल गया है। ऐसे में अगर किसी पुरस्कार से कलाकार की लोकप्रियता में वृद्धि होती है तो यह संभावना भी बनती है कि उसे कुछ आर्थिक उपलब्धि भी होगी। कलाकार के अस्तित्व के लिए, उसकी साधना के लिए आर्थिक स्त्रोतों का सजीव रहना बहुत ज़रूरी है। पुरस्कार इनकी संभावनाओं में वृद्धि करते हैं।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

अवसर की तलाश में बहुराष्ट्रीय कंपनियां

अविनाश जोशी

बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारतीय परिवेश में अपने आप को विकसित कर व्यापार बढ़ाने की जुगत में लगी हुई है एवम इन कंपनियों को इस बात का अहसास है की भारत का मध्यम वर्ग आबादी के हिसाब से यूरोप से भी बहुत बड़ा है एवम अधिकतर लोग हिंदी जानते है एवम हिंदी में बात करते है यह सच बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने समझ लिया है यही कारण है कि आजकल अधिकांश कंपनियां अपना विज्ञापन हिंदी में करते है क्योंकि अगर भारत में अपना उत्पाद बेचना है तो सबसे पहले देश की संस्कृति एवम भावनाओ को समझना होगा। कुछ वर्षो पूर्व भारत के अधिकांश ऑफिसेज में अंग्रेजी में ही बात होती थी और अंग्रेजी में ही उत्पाद का विवरण परोसा जाता था लेकिन परिस्थितियां बदल गई है आज हिंदी में हर उत्पाद का विवरण उपलब्ध है। एक बात तो स्पष्ट है कि व्यापार भले ही अंग्रेजी में हो रहा है लेकिन हिंदुस्तानी सपने तो आज भी हिंदी में ही लिए जाते है। यह सच एवम भाव बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने बखूबी समझ लिया है एवम यही कारण है कि अधिकांश विज्ञापन हिंदी में ही प्रसारित किए जाते है। किसी भी कंपनी को अपने उत्पाद को पहचान दिलाने के लिए विज्ञापन की जरूरत होती है एवम भारत में वो अंग्रेजी में संभव नहीं है। विश्व की अनेक नामचीन कंपनियां जैसे माइक्रोसॉफ्ट, नेस्ले, और पेप्सिको, आदि ने इस परिपाटी को समझा एवम सफलता पूर्वक व्यापार की आगे बढ़ाया। 1990 के दशक में जब से भारत वैश्वीकरण के लिए खुला तब से भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने उत्पाद विपणन के अनेकों प्रयोग किए एवम अंत में भारतीय जनमानस के भाव एवम विचारो के अनुसार ढाल के सफलता के पायदान पे अग्रणी स्थान पे कार्य कर रही है। लगातार बढ़ते प्रतिभा पूल, अनुकूल जनसांख्यिकी और मजबूत घरेलू मांग के साथ, भारत विकास के कई अवसर प्रदान करता है।

भारतीय बाज़ार में निश्चित रूप से बहुत अवसर है लेकिन इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सामने चुनौतियां ऐसी हैं कि हार्ले डेविडसन और जनरल मोटर्स जैसे स्थापित ब्रांड भी भारतीय बाजारों पर कब्जा करने की कोशिश कर चुके हैं और असफल रहे हैं। भारतीय उपभोक्ताओं को समरूप ग्राहक मानना एक बड़ी गलती है जो बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अक्सर करती हैं। एक ही देश में ग्राहकों की प्राथमिकताएँ अलग-अलग क्षेत्रों में काफी भिन्न होती हैं। बाजार में प्रवेश करने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए स्थानीय ज्ञान महत्वपूर्ण है, लेकिन यह ज्ञान प्राप्त करना आसान नहीं है, खासकर यदि कंपनी का नेतृत्व कोई प्रवासी कर रहा हो। भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की ऐसी समस्याओं से निजात पाने के लिए भारतीय मूल के लोगो को नेतृत्व देना होगा क्योंकि इन लोगों को इस बात की बेहतर समझ है कि भारत में सफल होने के लिए क्या करना होगा और वे बाजार की गतिशीलता के साथ-साथ देश के सांस्कृतिक परिदृश्य को भी समझते हैं। अनुभव एवम सफल नेतृत्व की दास्तान कहती लंबी फेहरिस्त भारत में उपलब्ध है इन प्रबंधकों को अवसर प्रदान कर कंपनियां अपने इच्छित स्थान पे पहुंच सकती है। किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी के लिए पूरे भारत में कार्यालय स्थापित करना काफी चुनौतीपूर्ण हो सकता है। उन्हें कर्मचारियों को अपने मन की बात कहने की अनुमति देने और फिर भी सभी को सांस्कृतिक विविधता के बारे में शिक्षित करने के बीच एक संतुलन बनाने की ज़रूरत है ताकि कोई भी नाराज न हो और सभी लोग सद्भाव में मिलकर काम कर सके। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को न केवल कंपनी की संस्कृति के निर्माण में बल्कि अपने कर्मचारियों की संस्कृति को समझने में भी निवेश करने की जरूरत है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पास शायद ही कभी वाणिज्यिक स्थान होते हैं। इसके बजाय, वे कार्यालय स्थान पट्टे पर लेना पसंद करते हैं। भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए सही कार्यालय स्थान का चयन करना सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। उच्च मांग के कारण, वाणिज्यिक परियोजनाओं के पूरी तरह से निर्माण और सौंपने से पहले उन्हें बड़े कार्यालय स्थान बुक करने की आवश्यकता होती है। प्रारंभ में, उनकी टीमों के लिए स्थान बहुत बड़ा हो सकता है, लेकिन जैसे-जैसे कंपनी बढ़ती है, उसका व्यापार बढ़ता है। अधिकांश बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने कार्यालय से आगे निकल जाती हैं। मौजूदा कार्य स्थल के करीब दूसरा स्थान ढूंढना आमतौर पर असंभव है। पारंपरिक कार्यालय मॉडल से दूर सह-कार्य स्थान पर जाना इस समस्या का सबसे व्यवहार्य समाधान हो सकता है। द ऑफिस पास (टॉप) जैसे सहकर्मी ऑपरेटर बहुराष्ट्रीय कंपनियों को फर्श की जगह के बजाय डेस्क की जगह पट्टे पर देने में सक्षम बनाते हैं। इस प्रकार, वे अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप पट्टे पर ली गई जगह का मिलान कर सकते हैं और अपने कर्मचारियों की संख्या के अनुरूप आकार बढ़ा सकते हैं। माइक्रोसॉफ्ट जैसे ब्रांडों ने पहले ही पहल कर दी है और भारत में लचीले कार्यालय स्थान को पट्टे पर देना शुरू कर दिया है।

भारतीय विलासितापूर्ण खरीदारी करने से नहीं कतराते, लेकिन साथ ही, वे रोजमर्रा की वस्तुओं और सेवाओं के लिए भी मोलभाव करते हैं। भारतीयों की मूल्य-केंद्रित मानसिकता अद्वितीय है और इसे अक्सर बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं के अंतर्गत सूचीबद्ध किया जाता है। जैसा कि आँकड़ों से साबित होता है, भारतीय ब्रांड के प्रति उतने वफादार नहीं हैं जितना वे मूल्य निर्धारण के प्रति सचेत हैं।

कीमतों में थोड़ी सी भी बढ़ोतरी से ग्राहकों का नुकसान हो सकता है। इसलिए, व्यवसायों को गुणवत्ता को प्रभावित किए बिना अपनी लागतों को नियंत्रित करने का एक तरीका खोजने की आवश्यकता है। यह एक और तरीका है जिससे सहकर्मी स्थान पर जाने से मदद मिल सकती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जो सह-कार्य इकाइयों में स्थान पट्टे पर लेती हैं, उन्हें सुरक्षा, कार्यालय एयर कंडीशनिंग, हाउसकीपिंग आदि जैसी परिचालन लागतों पर विचार करने की आवश्यकता नहीं होती है। लंबे समय में, इससे महत्वपूर्ण बचत हो सकती है। कोई यह मान लेगा कि भारत के प्रतिभा पूल और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए उपलब्ध संसाधनों को देखते हुए, लोगों को भर्ती करना आसान है लेकिन वास्तव में, भर्ती अभी भी भारत में विदेशी कंपनियों के सामने आने वाली चुनौतियों में से एक है। सबसे पहले, सभी शीर्ष बहुराष्ट्रीय कंपनियां सर्वश्रेष्ठ लोगों को काम पर रखने के लिए एक-दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। दूसरे, भारत के शीर्ष संस्थानों के शीर्ष लोग अब किसी ब्रांड के लिए काम करने से संतुष्ट नहीं हैं, वे अपना खुद का ब्रांड बनाना चाहते हैं।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उद्योग, स्थान और कंपनी के आकार के आधार पर भिन्न हो सकती हैं। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सामने आने वाली कुछ सामान्य चुनौतियों में शामिल हैं: सांस्कृतिक मतभेद, कानूनी और नियामक अनुपालन, मुद्रा में उतार-चढ़ाव, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, प्रतिस्पर्धा, प्रतिभा प्रबंधन और प्रतिष्ठा प्रबंधन।

ऐसे कई कारक हैं जो बहुराष्ट्रीय निगमों (एमएनसी) के विकास को प्रभावित कर सकते हैं, जिनमें शामिल हैं: आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता, पूंजी तक पहुंच, तकनीकी प्रगति, बाजार की मांग, वैश्वीकरण, प्रतिभा अधिग्रहण और प्रबंधन और नियामक वातावरण। किसी कंपनी के विकास को प्रभावित करने वाले विशिष्ट कारक उसके उद्योग, भौगोलिक स्थिति और अन्य कारकों के आधार पर अलग-अलग होंगे। देश बदल रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बड़े-बड़े अधिकारी भी अब हिन्दी सीख रहे हैं। उन्हें मालूम है कि भारत एक बड़ा बाजार है और अगर यहाँ टिके रहना है तो यहाँ की भाषा सीखकर ही आगे बढ़ सकते हैं। यही कारण है की हिंदुस्तान का हर उत्सव एवम त्यौहार बहुराष्ट्रीय कंपनियां गर्मजोशी से मनाते है एवम उसमे भी कही न कही व्यापार के अवसर तलाशते रहते है।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र लेखक एवं पत्रकार

केवलादेव राष्ट्रीय पक्षी घना उद्यान से 19 चीतल रामगढ़ विषधारी लाये गये

16 मादा चीतल और 3 नर चीतल को लाकर छोड़ा गया

बूंदी, (निसं)। रामगढ़ विषधारी को आबाद करने और जिले में इको टूरिज्म को गति देने की दृष्टि से एक और बाघिन को रणथंभौर टाइगर रिजर्व से लाने की तैयारी चल रही है।

इसी तैयारी के चलते केवलादेव राष्ट्रीय पक्षी घना उद्यान से प्री-बेस के रुप में 19 चीतल लाए गए जो रामगढ़ विषधारी की जमीन पर कुलांचे भरते नजर आए। शनिवार देर शाम को 19 चीतल रामगढ़ विषधारी की जमीन पर कंटेनर से आजाद किए गए। इनकी इस खेप में 16 मादा चीतल और 3 नर चीतल हैं। रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व के उपवन संरक्षक संजीव शर्मा ने बताया कि घना से आए इन चीतलों को अभ्यारण्य क्षेत्र के झरबंधा क्षेत्र में छोड़ा गया है। सभी 19 चीतल सकुशल वाहन से कूदकर वन क्षेत्र में कुलांचे भरते हुए चले गए।

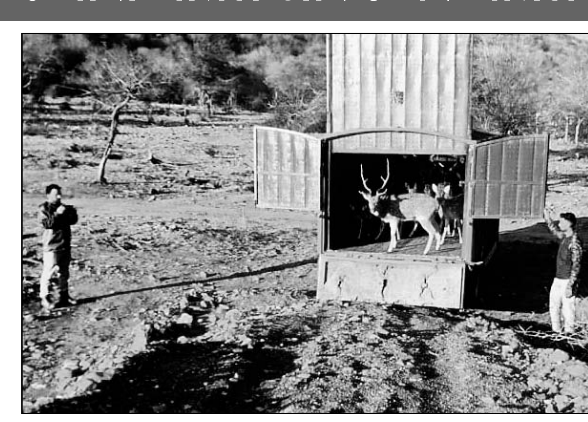

चीतल रामगढ़ विषधारी की जमीन पर कंटेनर से छोड़े गए।

> ■ **'चीतल का साल में दो बार अप्रैल-मई व सितंबर-अक्टूबर में प्रजनन काल रहता है'**

भरतपुर के घना नेशनल पार्क से इन चीतल को ट्रेप कर वाहन द्वारा रामगढ़ लाया गया।

गौरतलब है कि रामगढ़ विषधारी में 150 चीतल भेजे जाने है। पूर्व में भी घना अभ्यारण्य से चीतल को यहां लाकर वन क्षेत्र में छोड़ा गया हैं, जिनकी संख्या भी वर्तमान में अच्छी हो चुकी है। संजीव शर्मा, उपवन संरक्षक एवं उप क्षेत्र निदेशक, ने बताया कि रामगढ़-विषधारी टाइगर रिजर्व-रामगढ़ टाइगर रिजर्व में घाना से आए 19 चीतलों ने सकुशल छोड़ा गया। वनकर्मियों द्वारा इनकी मॉनिटरिंग की जा रही है। इनके आने से रामगढ़ में प्रे-बेस में बढ़ोतरी होगी। विट्ठल सनाढ्य पूर्व वन्य जीव प्रतिपालक ने बताया कि चीतल का साल में दो बार अप्रैल-मई व सितंबर-अक्टूबर में प्रजनन काल रहता है। जिससे चीतल की संख्या तेजी से बढ़ती है। आसानी से पेड़ों झाड़ियों की पत्तियां खाकर अपना पेट भर लेते हैं। इनके लिए विशेष ग्रासलैंड की जरूरत भी नीं होती हैं।

80 फीट गहरे कुएं में गिरा अजगर

पुष्कर, (निसं.)। अजमेर जिले के पुष्कर के नजदीक चावंडिया गांव में ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस मित्र टीम की सूझबूझ के कारण कुएं में गिरे अजगर सांप की जान आखिरकर बच गई। चावंडिया गांव में किसान नोरत माली के खेत पर बने करीब 80 फीट गहरे कुएं में एक अजगर सांप गिर गया था। खेत पर पहुंचे नोरत ने जब कुएं में देखा तो कुएं में अजगर सांप नजर आया, जिसके बाद नोरत ने निस्वार्थ रूप से सांपों का जीवन बचाने वाली पुलिस मित्र टीम को कुएं में अजगर सांप गिरने की सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस मित्र की टीम के स्नेक रेस्क्यूएर राजेन्द्र बच्चानी, सांवरा शर्मा व विष्णु प्रकाश ने तुरन्त ही कुएं में गिरे अजगर सांप को निकालने का प्रयास शुरू किया।

सबसे पहले रस्सियों की सहायता से अजगर को बाहर निकालने का प्रयास किया गया पर अजगर का वजन ज्यादा होने के कारण रेस्क्यू करने में परेशानी हुई। इसके पश्चात स्नेक रेस्क्यूएर राजेन्द्र वच्छनी सहयोगी के साथ कुवे में उतरकर 12 फीट लंबे भारी भरकम अजगर को रेस्क्यू किया और बाहर निकाला। मोके पर मौजूद ग्रामीणों ने अजगर की जान बचाने पर टीम पुलिस मित्र के निस्वार्थ कार्यों की सराहना की। इसके पश्चात अजगर को वन विभाग के अधिकारी सौरभ जैन व भंवर सिंह के निर्देशन में जंगल में सुरक्षित छोड़ दिया गया। बताया जा रहा है कि अजगर सांप तीन-चार दिन पहले कुएं में गिरा था। लेकिन मालिक को उसे निकालने का रास्ता नहीं नजर आया। अगर ज्यादा दिन तक अजगर कुएं में रहता तो मर जाता। क्योंकि कुएं में ज्यादा खाने को नहीं मिलता साथ ही ठंड के मौसम में ठंडा पानी उसके लिए घातक सिद्ध होता। वन्यजीवों के विशेषज्ञ राजेन्द्र वच्छनी कहना है कि अजगर जैसे कोल्ड ब्लड वाले प्राणी को बहुत ज्यादा ठंडा पानी वैसे ही सूट नहीं करता इस कारण से भी उसकी मृत्यु हो जाती।

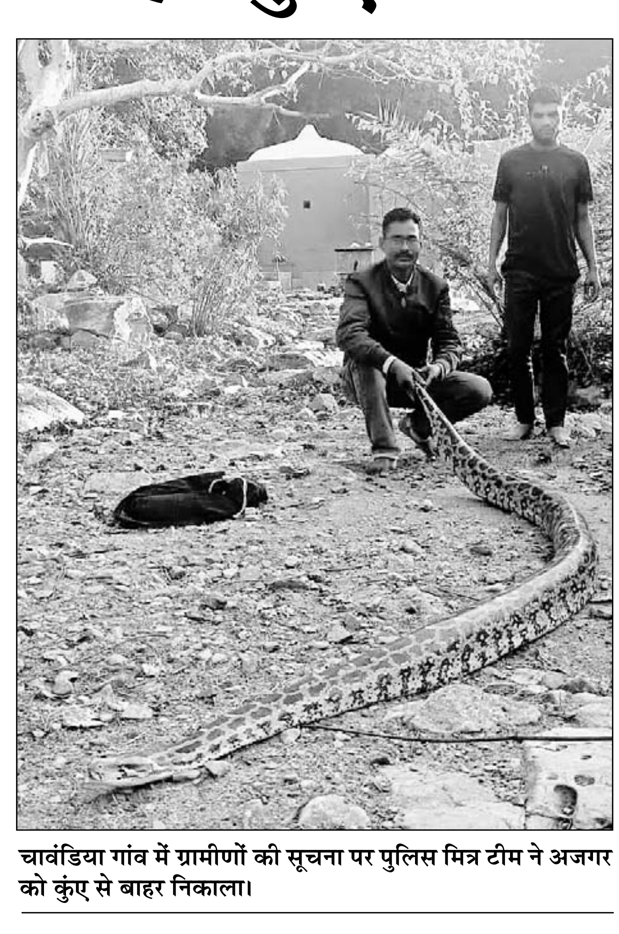

चावंडिया गांव में ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस मित्र टीम ने अजगर को कुंए से बाहर निकाला।

> ■ **टीम पुलिस मित्र ने कुएं में उतरकर अजगर की जान बचाई**
>
> ■ **बताया जा रहा है कि अजगर तीन-चार दिन पहले कुएं में गिरा था**

सामूहिक विवाह सम्मेलन में छह जोड़े हमसफर बने

अजमेर, (कासं)। भारत विकास परिषद अरावली अजमेर की ओर से सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन विजयलक्ष्मी पार्क में किया गया। सम्मेलन में छह जोड़े विवाह बंधन में बंधे। भाविप अरावली अजमेर शाखा के संरक्षक संदीप गोयल ने बताया कि पिछले चार वर्षों से शाखा की ओर से सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया जाता रहा है।

इसी कड़ी में 6 जोड़ों का सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। यह आयोजन सर्व हिंदू समाज के जोड़ों के लिए किया गया। सामूहिक विवाह सम्मेलन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मेयर ब्रज लता हाडा ने सभी वर वधु को आशीर्वाद देते हुए सुखी दांपत्य जीवन की शुभकामना दी। साथ ही उन्होंने संस्था को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि यह ऐसे कार्यक्रम सामाजिक समरसता का प्रतीक है और सर्व समाज को एकत्रित होकर इस प्रकार के आयोजन करने चाहिए। इस अवसर पर नगर निगम अजमेर द्वारा समारोह स्थल की सभी व्यवस्थाएं सहयोग करने के लिए शाखा सदस्यों ने महापौर का धन्यवाद ज्ञापित किया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 12 फरवरी, 2024

माघ मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र दिन 2:57 तक, सिद्ध योग रात्रि 2:37 तक, तैतिल करण प्रातः 7:27 तक, चन्द्रमा प्रातः 9:36 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मकर, बुध-मकर, गुरू-मेष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 2:57 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 4:13 से आरम्भ होगी। आज गौरी तृतीया, वरद और कुन्द चतुर्थी, तिल चौथ, पंचक है। आज सावान मु. मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ सूर्योदय से 8:33 तक, शुभ 9:55 से 11:15 तक, चर 2:04 से 3:27 तक, लाभ-अमृत 3:27 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:10, सूर्यास्त 6:12

मेष
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
आज नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। घर-परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को परिचितों से सहयोग मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनः स्थिति में सुधार होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।